SHRI KHALIL AHAMAD

Shri Khalil Ahamad is a skilled and capable craftsman and famous as carpet Man.

2. Born on 15th March, 1948, in a very poor family, Shri Khalil's life was full of struggle since his childhood but with his ability, hard work and dedication he mastered the Persian weaving of traditional carpets and durries. The outcome of his work done in the field of warp and weft can be measured by his skills, awards, appreciation letters, participation in the exhibitions globally and recognition by the carpet world. He became an inspiration for the coming generation. He not only trained thousands of artisans but also made them financially elevated. His contribution as a senior most artisan as a master trainer, as an innovative craftsman, as a designer is admirable. He popularized weaving of Persian design among unemployed youths of Mirzapur, U.P. He trained them, made them able to earn for their livelihood. He has always encouraged them to turn their expertise into entrepreneurship. Several artisans under his guidance have turned into successful businessmen. Many artisans have joined export houses in Mirzapur, Bhadohi and Panipat.

3. Shri Khalil started displaying his skills in the crafts demonstration programmes organized in Crafts Museum at Delhi in January 1992 and was appreciated by the local visitors and many foreign delegations. He attended a Carpet Fair at Glasgow, Scotland in the year 1992 and mesmerized the public by his sheer skill and innovative designs. He was welcomed in International exhibition held at London in 1993. He also got opportunity to participate in the exhibitions held in Turkmenistan in 1994. Punja Durry Clinic organized by the Academy of Management Studies at Lucknow in 1994 to upgrade designing skill shops for Punja Dhurrie weavers proved successful because of his innovative, creative and skillful guidance. Hastshilp Kaushal Vikas Punja Dhurrie Traning Programme is another feather in his cap. He has trained around hundreds of artisans during this programme organized by Directorate of Industries.

4. Shri Khalil has received many awards and recognitions such as National Award for his splendid services in Handicrafts Sector (DURRIES) in 2000 by the Ministry of Textiles, Shilp Guru Award in 2008 by Ministry of Textiles. He was honoured with Kala Shree Samman at Surajkund International Craft Mela; received O.D.O.P. award at Samman Divas in U.P.; received Certificate of appreciation by American Embassy School, New Delhi; participated in I.H.G.F. International Fair 2014 held at Frankfurt, Germany; attended and honoured at Kartik Cultural Festival Society Faridabad; received a letter of appreciation at M.T.N.L. Health Mela Talkatora, Delhi in 2004; received a Samman patra at Craft Founders Masters Club at Design conclave evam shilpkar Bunker Sammelan in U.P.

श्री खलील अहमद

श्री खलील अहमद एक कुशल एवं योग्य शिल्पकार हैं और कालीन पुरुष के नाम से प्रसिद्ध हैं।

2. 15 मार्च, 1948 को एक बेहद गरीब परिवार में जन्मे, श्री खलील का जीवन बचपन से ही संघर्ष से भरा था, लेकिन अपनी क्षमता, कड़ी मेहनत और समर्पण से उन्होंने पारंपरिक कालीन और दरी की फारसी बुनाई में महारत हासिल कर ली। ताना और बाना के क्षेत्र में किए गए उनके काम के परिणाम को उनके कौशल, पुरस्कारों, प्रशंसा पत्रों, विश्व स्तर पर प्रदर्शनियों में भागीदारी और कालीन जगत द्वारा मान्यता से आँका जा सकता है। वह आने वाली पीढ़ी के लिए प्रेरणा बन गये। उन्होंने न केवल हजारों कारीगरों को प्रशिक्षित किया बल्कि उन्हें आर्थिक रूप से भी समृद्ध बनाया। वरिष्ठतम कारीगर के रूप में, एक मास्टर प्रशिक्षक के रूप में, एक अभिनव शिल्पकार के रूप में, एक डिजाइनर के रूप में उनका योगदान सराहनीय है। उन्होंने उत्तर प्रदेश के मिर्ज़ापुर में बेरोजगार युवाओं के बीच फ़ारसी डिज़ाइन की बुनाई को लोकप्रिय बनाया। उन्होंने उन्हें प्रशिक्षित किया और उन्हें अपनी आजीविका कमाने में सक्षम बनाया। उन्होंने हमेशा उन्हें अपनी विशेषज्ञता को उद्यमिता में बदलने के लिए प्रोत्साहित किया है। उनके मार्गदर्शन में कई कारीगर सफल व्यवसायी बन गए हैं। यहां के कई कारीगर मिर्ज़ापुर, भदोही और पानीपत में निर्यात प्रतिष्ठान से जुड़ गए हैं।

3. श्री खलील ने जनवरी 1992 माह में दिल्ली के शिल्प संग्रहालय में आयोजित शिल्प प्रदर्शनी कार्यक्रमों में अपने कौशल का प्रदर्शन शुरू किया और स्थानीय आगंतुकों और कई विदेशी प्रतिनिधिमंडलों द्वारा उनकी सराहना की गई। उन्होंने वर्ष 1992 में स्कॉटलैंड के ग्लासगो में एक कालीन मेले में भाग लिया और अपने कौशल और नवीन डिजाइनों से जनता को मंत्रमुग्ध कर दिया। वर्ष 1993 में लंदन में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी में उनका स्वागत किया गया। उन्हें वर्ष 1994 में तुर्कमेनिस्तान में आयोजित प्रदर्शनियों में भी भाग लेने का अवसर मिला। पुंजा दरी बुनकरों के लिए डिजाइनिंग कौशल की दुकानों को उन्नत करने के लिए वर्ष 1994 में लखनऊ में एकेडमी ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज द्वारा गठित पुंजा दरी क्लिनिक उनके नवीन, रचनात्मक और कुशल मार्गदर्शन के कारण सफल साबित हुआ। हस्तशिल्प कौशल विकास पुंजा दरी ट्रेनिंग प्रोग्राम उनकी एक अन्य उपलब्धि है। उद्योग निदेशालय द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम के दौरान उन्होंने लगभग सैकड़ों कारीगरों को प्रशिक्षित किया है।

4. श्री खलील को कई पुरस्कार और सम्मान मिले हैं जैसे हस्तशिल्प क्षेत्र में उनकी शानदार सेवाओं के लिए वस्त्र मंत्रालय द्वारा वर्ष 2000 में उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार (दरीज़), तथा वर्ष 2008 में शिल्प गुरु पुरस्कार दिया गया। उन्हें सूरजकुंड अंतर्राष्ट्रीय शिल्प मेले में कला श्री सम्मान से सम्मानित किया गया; उन्हें उत्तर प्रदेश में सम्मान दिवस पर ओ.डी.ओ.पी. पुरस्कार प्राप्त हुआः अमेरिकन एम्बेसी स्कूल, नई दिल्ली द्वारा प्रशंसा प्रमाण पत्र प्रदान किया गया; साथ ही उन्होंने फ्रैंकफर्ट, जर्मनी में आयोजित आई.एच.जी.एफ अंतर्राष्ट्रीय मेला 2014 में प्रतिभागिता की; कार्तिक कल्चरल फेस्टिवल सोसाइटी फ़रीदाबाद में प्रतिभागिता की और उन्हें सम्मानित किया गया; वर्ष 2004 में एम.टी.एन.एल. स्वास्थ्य मेला तालकटोरा, दिल्ली से उन्हें प्रशंसा पत्र प्राप्त हुआ और उत्तर प्रदेश में डिज़ाइन कॉन्क्लेव एवं शिल्पकार बुनकर सम्मेलन में क्राफ्ट फाउंडर्स मास्टर्स क्लब में सम्मान–पत्र प्राप्त हुआ।